INNOVARE JOURNAL OF EDUCATION
Vol 12, Issue 6, 2024, 30-37
ISSN: 2347-5528
Research Article

भोपाल जिले में स्थित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में दायित्व बोध एवं नवाचार के प्रति जागरूकता का अध्ययन

A Study on the Sense of Responsibility and Awareness Towards Innovation among Teachers in Teacher Education Colleges in Bhopal District

पुष्पलता साहू
मित्तल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, नवी बाग, बीएमआरसी के सामने, करोंद, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

Pushlata Sahu
Mittal Institute of Education, Navi Bag, Infront of BMHRC, Karond, Bhopal, Madhya Pradesh, India

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भोपाल जिले में स्थित राष्ट्रीय अध्यापक परिषद द्वारा वर्ष 2024 में संचालित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में दायित्व बोध एवं नवाचार के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था। जिसके लिए चार उद्देश्यों का निर्माण किया गया उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शोधार्थी ने कल 150 उत्तरदाताओं का चयन संभाव्य न्यादर्श विधि द्वारा किया। जिनमें से 100 महिलाएं एवं 50 पुरुषों का चयन उत्तरदाताओं के रूप में किया, और 20 प्रश्नों की एक प्रश्नावली का निर्माण आंकड़ों के संकलन के लिए किया। अध्ययन में यह पाया गया कि जिन शिक्षकों में अपने दायित्वों के प्रति सजगता अधिक थी, वे अपने शिक्षण में नवाचार अपनाने के प्रति अधिक इच्छुक थे। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि सीमित संसाधन नवाचारों को पूरी तरह अपनाने में बाधक हैं, लेकिन शिक्षकों ने डिजिटल तकनीक और सक्रिय शिक्षण विधियों को अपने शिक्षण में शामिल करने की आवश्यकता को पहचाना। निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि शिक्षकों की जिम्मेदारी और नवाचार आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और इनका प्रभाव शिक्षण की गुणवत्ता और छात्रों की सहभागिता पर पड़ता है।

शब्दकोश: शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, दायित्व बोध, नवाचार, शैक्षिक गुणवत्ता

Abstract

The purpose of the present study was to examine the sense of responsibility and awareness toward innovation among teachers working in teacher education colleges operated by the National Council for Teacher Education in the Bhopal district in the year 2024. For this, four objectives were formulated, and to fulfill those objectives, the researcher selected 150 respondents through the probable sampling method. Among them, 100 women and 50 men were chosen as respondents, and a questionnaire of 20 questions was developed for data collection. The study found that teachers who were more aware of their responsibilities were more inclined to adopt innovations in their teaching. The research also revealed that limited resources are a hindrance to fully embracing innovations, but teachers recognized the need to incorporate digital technology and active teaching methods in their instruction. The conclusions indicate that responsibility and innovation among teachers are deeply interconnected, and they have a significant impact on the quality of teaching and student engagement.

Keywords: teacher education college, sense of duty, innovation, educational quality

© 2024 The Author. Published by Innovare Academic Sciences Pvt Ltd. This is an open access article under the CC BY license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).
DOI: https://dx.doi.org/10.22159/ijoe.2024v12i6.52799. Journal homepage: https://journals.innovareacademics.in/index.php/ijoe.

आभार: लेखक ने भोपाल जिले में स्थित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को अनुसंधान में सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया है। **लेखक का योगदान:** यह कार्य पूरी तरह से लेखक के प्रयासों का परिणाम है। अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने, सांख्यिकीय विश्लेषण करने, और प्रोटोकॉल तथा पांडुलिपि का मसौदा लिखने का कार्य लेखक ने स्वयं किया है। **हितों का टकराव:** लेखक यह घोषणा करते हैं कि उनका कोई हितों का टकराव नहीं है। **वित्तीय स्रोत:** स्वयं वित्त पोषण ।

इस लेख के संबंध में पत्राचार पुष्पलता साहू, मित्तल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, नवी बाग, बीएमआरसी के सामने, करोंद, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत।
ईमेल: kavitasahu.1688@gmail.com

प्रस्तावना

शिक्षा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है, और किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं विकास में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक न केवल छात्रों को ज्ञान प्रदान करती हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण में भी अहम भूमिका निभाती हैं। इसके अलावा, समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों के पास दायित्व बोध और नवाचार की विशेष भूमिका होती है। शिक्षकों का कार्य केवल पारंपरिक शिक्षण विधियों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के बदलते परिवेश के साथ नवाचार और शिक्षा के नवीन दृष्टिकोण को अपनाना भी आवश्यक है। शिक्षा किसी भी समाज और देश की प्रगति का प्रमुख स्तंभ होती है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि और प्रगति उसके शैक्षिक तंत्र की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इस परिप्रेक्ष्य में, शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वे शिक्षा के माध्यम से समाज के विकास और परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में, शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल शैक्षिक सामग्री को सिखाएं बल्कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए नवाचार (innovation) और कर्तव्यबोध (sense of duty) का प्रदर्शन करें। शिक्षकों की इस भूमिका का प्रभाव शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों पर अधिक होता है, जो भविष्य के शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य भोपाल जिले में स्थित शिक्षा महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों में कर्तव्यबोध और नवाचार के प्रति जागरूकता का मूल्यांकन करना है। अध्ययन के अंतर्गत यह समझने की कोशिश की गई है कि किस प्रकार शिक्षकों का कर्तव्यबोध और नवाचार के प्रति उनका दृष्टिकोण न केवल उनके शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, बल्कि इससे विद्यार्थियों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

कर्तव्यबोध का महत्व

कर्तव्यबोध से तात्पर्य किसी व्यक्ति के अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता से है। शिक्षक के रूप में, यह आवश्यक है कि वे अपने शिक्षण कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाएं और विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए प्रयासरत रहें। शिक्षकों का कर्तव्य केवल पाठ्यक्रम को पूरा करने तक सीमित नहीं होता, बल्कि छात्रों की नैतिक, मानसिक और शारीरिक क्षमता को भी बेहतर बनाना होता है।

भोपाल के शिक्षा महाविद्यालयों में कर्तव्यबोध की जांच करने के लिए यह अध्ययन किया गया, ताकि यह समझा जा सके कि किस प्रकार शिक्षकों की जिम्मेदारी और उनके व्यवहारिक कर्तव्य छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास को प्रभावित करते हैं। विभिन्न अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि जिन शिक्षकों में कर्तव्यबोध की भावना उच्च स्तर पर होती है, वे विद्यार्थियों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकते हैं। अध्यापक यदि अपने कार्य को केवल एक नौकरी के रूप में न देख कर एक सामाजिक सेवा और योगदान के रूप में देखता है, तो यह दृष्टिकोण उनके शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाता है (शर्मा एवं गुप्ता, 2015)।

नवाचार की भूमिका

शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को लाभ होता है। नवाचार से तात्पर्य उन नए तरीकों, विधियों, और तकनीकों का प्रयोग है जो शिक्षण को प्रभावी, रोचक और सृजनात्मक बनाते हैं। नवाचार के माध्यम से शिक्षक न केवल विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि उन्हें समस्याओं को सुलझाने की नई तकनीकें और दृष्टिकोण भी सिखाते हैं।

वर्तमान युग में शिक्षा में तकनीकी सुधार और नवाचार की आवश्यकता अत्यधिक है। पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से हटकर, नवीन शिक्षण उपकरणों का उपयोग जैसे डिजिटल तकनीक, मल्टीमीडिया, और सक्रिय शिक्षण तकनीकें विद्यार्थियों को अधिक सशक्त बनाती हैं। भोपाल के शिक्षा महाविद्यालयों में यह देखा गया है कि कई शिक्षक इन तकनीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग कर रहे हैं। इससे छात्रों की सीखने की गति और समझ में सुधार हुआ है। इसके अलावा, नवाचार की प्रवृत्ति विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करती है, जिससे उनका आत्मविश्वास और समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण मजबूत होता है (कुमार एवं सिंह, 2018)।

कर्तव्यबोध और नवाचार के प्रति जागरूकता का संबंध

कर्तव्यबोध और नवाचार के प्रति जागरूकता के बीच घनिष्ठ संबंध है। यदि किसी शिक्षक में कर्तव्यबोध की भावना प्रबल होती है, तो वह अपने शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावी और नवीन तरीके से करने के लिए प्रेरित होता है। शिक्षण एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें निरंतर बदलाव और विकास की आवश्यकता होती है। यदि शिक्षक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होते हैं, तो वे न केवल छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान कर सकते हैं, बल्कि वे नवाचार को भी अपने शिक्षण में शामिल कर सकते हैं। कर्तव्यबोध और नवाचार के बीच का यह संबंध शिक्षा महाविद्यालयों के संदर्भ में और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ प्रशिक्षित होने वाले शिक्षक भविष्य में शिक्षा की दिशा को प्रभावित करते हैं। यदि वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक होंगे और नवाचार के महत्व को समझेंगे, तो यह भावी पीढ़ी को उचित तरीके से शिक्षित कर सकेंगे (राना एवं मिश्रा, 2019)।

उद्देश्य

1, दायित्व बोध का मूल्यांकनः शिक्षकों में उनके कर्तव्यों, जिम्मेदारियों, और छात्रों के प्रति उनकी जवाबदेही का आकलन करना।
2, नवाचार के प्रति जागरूकताः शिक्षण पद्धतियों में नए नवाचारों के प्रति शिक्षकों की जागरूकता और उन्हें संचालित करने की रुचि की आकलन करना।
3, शिक्षण में नवीन तरीकों का उपयोगः यह जानना कि शिक्षक नवीन तकनीकों और तरीकों को किस सीमा तक अपने शिक्षण में शामिल कर रहे हैं।
4, चुनौतियों की पहचानः उन कारकों की पहचान करना जो शिक्षकों को नवाचार अपनाने और दायित्वों का पालन करने से रोकते हैं।

अनुसंधान प्रविधि

अध्ययन की गहनता एवं कार्य प्रणाली के अध्ययन के लिए शोधार्थी ने सर्वप्रथम संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा की जिसके लिए शोधार्थी ने शोधगंगा रिसर्च गेट और कॉलेज लाइब्रेरी में उपलब्ध जर्नल से प्रकाशित शोध साहित्यिक का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में केवल दो वर्षीय बीएड एवं एक वर्षीय एमड महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों को शामिल किया गया है। उन महाविद्यालयों से शिक्षकों का चयन प्रतिदर्श के रुप में किया गया है जो भोपाल जिला में स्थित है। भोपाल जिले में 74 बीएड एवं 19 एमड महाविद्यालय है (एनसीटीई, एनडी)। शोध अध्ययन हेतु कुल 150 उत्तरदाताओं का चयन सम्भाव्य न्यादर्श विधि से किया गया, जिनमें से कुल 100 महिला शिक्षिकाएं और 50 पुरुष उत्तरदाताओं का चयन किया गया। तद्उपरांत शोध के उद्देश्यों के अनुरूप शोधार्थी ने यह निर्णय लिया कि शोध हेतु प्रश्नावली विधि प्रदत्त संकलन के लिए उपयुक्त रहेगी। इस हेतु शोधार्थी ने एक प्रश्नावली का निर्माण किया शोध अध्ययन के चार उद्देश्य थे। चारों उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक उद्देश्य के आधार पर पांच–पांच प्रश्नों का निर्माण किया गया। प्रश्न पंचपदीय लिंकर्ड स्केल पर आधारित थे, अर्थात 1 = पूर्णता असहमत, 2 = असहमत 3 = न तो सहमत नहीं असहमत, 4 = सहमत, 5 = पूरी तरह सहमत। प्रदत्तों का मापन परिमाणात्मक प्रदत्त के आधार पर किया गया। चरों का मापन असतत् प्रवृत्ति पर आधारित है।

अध्ययन की सीमाएँ

समस्या का स्वरूप साधारणतः अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप से अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। इन सीमाओं से अनुसंधानकर्ता को अध्ययन में सहायता मिलती है शोध की निष्कर्ष भी इन्हीं सीमाओं से सुनिश्चित हो जाते हैं (शर्मा, 2006, पृपृ. 86–87)। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन की सीमाओं का वर्णन चर, क्षेत्र, न्यादर्श, शोध विधि एवं परीक्षण प्रपत्र के आधार पर किया गया है जो निम्नलिखित हैः

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में कार्य शिक्षकों में दायित्व एवं नवाचार के प्रति जागरूकता केवल दो चरो का अध्ययन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन भोपाल जिले में संचालित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में कार्य शिक्षकों तक सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन मात्र 150 न्यादर्श तक सीमित है।
4. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल प्रश्नावली शोध विधि पर आधारित है।
5. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल स्वनिर्मित 20 प्रश्नों बंद प्रश्नावली प्रणाली पर आधारित है।

परिणाम

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर प्राप्त पदार्थों के विश्लेषण हेतु निर्मित की गई प्रश्नावली को चार भागों में विभाजित किया गया प्रत्येक उद्देश्य के आधार पर एक एक तालिका का विश्लेषण किया गया।

तालिका 1
शिक्षकों में उनके दायित्व बोध के प्रति दी गई प्रतिक्रियाएँ

प्रश्न	पूरी तरह असहमत		असहमत		न तो सहमत, न ही असहमत		सहमत		पूरी तरह सहमत	
	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)
मैं छात्रों के परीक्षा परिणामों के लिए पूरी तरह उत्तरदायी महसूस करता/करती हूँ।	04 (04)	08 (16)	15 (15)	06 (12)	21 (21)	20 (40)	29 (29)	06 (12)	31 (31)	10 (20)
मेरे शिक्षण का प्रभाव छात्रों के समग्र विकास पर पड़ता है।	00 (00)	00 (00)	02 (02)	00 (00)	15 15)	09 (18)	49 (49)	30 (60)	34 (34)	11 (22)
छात्रों के नैतिक और मानसिक विकास में मेरी भूमिका महत्वपूर्ण है।	02 (02)	00 (00)	09 (09)	07 (14)	08 (08)	11 (22)	40 (40)	20 (40)	41 (41)	12 (24)
मैं अपने शिक्षण परिणामों के लिए संस्थान और समाज के प्रति जिम्मेदार हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	04 (04)	02 (4)	30 (30)	24 (48)	66 (66)	24 (48)
छात्रों की समस्याओं को हल करने के लिए मैं खुद को जिम्मेदार मानता/मानती हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00))	00 (00)	00 (00)	00 (00)	68 (68)	27 (54)	32 (32)	23 (46)

टिप्पणी. 1 = पूरी तरह असहमत, 2 = असहमत, 3 = न तो सहमत, न ही असहमत, 4 = सहमत, 5 = पूरी तरह सहमत।
न्यादर्श = 150।

तालिका 1 में शिक्षकों की जिम्मेदारी, कर्तव्यों और छात्रों के विकास पर उनके प्रभाव को लेकर उनके दृष्टिकोण का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह तालिका शिक्षकों के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनकी जिम्मेदारी के प्रति विचारों को दर्शाती है, जिनमें छात्रों के शैक्षणिक परिणाम, समग्र विकास, नैतिक और भावनात्मक विकास, संस्थागत जिम्मेदारी और समस्या समाधान शामिल हैं।

सबसे पहले, तालिका में शिक्षकों के विचारों को दर्शाया गया है कि वे छात्रों के परीक्षा परिणामों के प्रति कितनी जिम्मेदारी महसूस करते हैं। केवल एक छोटा प्रतिशत महिला (4 प्रतिशत) और पुरुष (16 प्रतिशत) शिक्षक पूरी तरह से इस बात से असहमत थे कि वे छात्रों के परीक्षा परिणामों के लिए जिम्मेदार हैं। हालांकि, शिक्षकों का एक बड़ा हिस्सा जिसमें 31 प्रतिशत महिला और 20 प्रतिशत पुरुष शिक्षक पूरी तरह से सहमत थे। यह संकेत करता है कि एक महत्वपूर्ण संख्या में शिक्षक इस बात को महसूस करते हैं कि छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए वे जिम्मेदार हैं।

इसके अलावा, तालिका यह दर्शाती है कि शिक्षकों को अपने शिक्षण का छात्रों के समग्र विकास पर कितना प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से, कोई भी शिक्षक इस बात से पूरी तरह असहमत नहीं था कि उनके शिक्षण का छात्रों के समग्र विकास पर प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके विपरीत, 60 प्रतिशत पुरुष और 49 प्रतिशत महिला शिक्षक सहमत थे कि उनका शिक्षण छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षकों के बीच इस बात की गहरी जागरूकता को दर्शाता है कि उनका प्रभाव केवल अकादमिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों के भविष्य को आकार देने में भी महत्वपूर्ण है।

आगे, तालिका में शिक्षकों के नैतिक और भावनात्मक विकास में उनके योगदान को लेकर उनके विचारों को भी देखा गया है। लगभग 40

प्रतिशत पुरुष और 40 प्रतिशत महिला शिक्षक सहमत थे कि वे छात्रों के नैतिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि कुछ प्रतिशत आंशिक रूप से सहमत या असहमत थे। यह दिखाता है कि कई शिक्षक इस बात को समझते हैं कि वे छात्रों के व्यक्तिगत और भावनात्मक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और नैतिक दिशा–निर्देशों को शिक्षा का हिस्सा मानते हैं।

शिक्षकों के संस्थान और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी तालिका में उजागर किया गया है। एक बड़ी संख्या में महिला (66 प्रतिशत) और पुरुष (48 प्रतिशत) शिक्षक पूरी तरह से सहमत थे कि वे न केवल अपने शैक्षणिक संस्थान के प्रति बल्कि समाज के प्रति भी जिम्मेदार हैं। यह शिक्षकों के बीच एक मजबूत कर्तव्यबोध को दर्शाता है, जो यह पहचानते हैं कि उनका प्रभाव कक्षा से बाहर निकलकर समुदाय और समाज के ढांचे तक पहुंचता है।

अंत में, तालिका में यह दिखाया गया है कि शिक्षक छात्रों की समस्याओं को हल करने की जिम्मेदारी कितनी महसूस करते हैं। अधिकांश महिला (68 प्रतिशत) और पुरुष (54 प्रतिशत) शिक्षक सहमत थे कि वे छात्रों की समस्याओं को हल करने की जिम्मेदारी उठाते हैं। यह दिखाता है कि शिक्षक न केवल एक शिक्षक के रूप में बल्कि छात्रों के लिए एक सहायता प्रणाली के रूप में भी अपनी भूमिका को स्वीकार करते हैं, जिसमें वे शैक्षणिक और व्यक्तिगत चुनौतियों में मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हैं।

कुल मिलाकर, तालिका शिक्षकों की जिम्मेदारियों के प्रति उनके दृष्टिकोण का व्यापक रूप से अवलोकन प्रस्तुत करती है। यह शिक्षकों के बीच इस बात की उच्च स्तर की जागरूकता को दर्शाती है कि वे छात्रों के शैक्षणिक, भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, साथ ही उनके संस्थान और समाज के प्रति व्यापक जिम्मेदारी महसूस करते हैं। यह आकडें एक मजबूत कर्तव्यबोध और इस विश्वास को दर्शाता है कि उनके कार्यों का उनके देखभाल में आए छात्रों के भविष्य पर गहरा प्रभाव है।

तालिका 2

शिक्षण पद्धतियों में नवाचारों के प्रति जागरूकता हेतु शिक्षकों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाएँ

प्रश्न	पूरी तरह असहमत		असहमत		न तो सहमत, न ही असहमत		सहमत		पूरी तरह सहमत	
	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)
मैं शिक्षा में नवीन तकनीकों और नवाचारों के बारे में नियमित रूप से जानकारी प्राप्त करता/करती हूँ।	00 (00)	00 (00)	04 (04)	02 (4)	13 (13)	06 (12)	29 (29)	17 (34)	54 (54)	25 (50)
मैं शिक्षण पद्धतियों में नवीन तरीके और तकनीक अपनाने के लिए उत्सुक हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	07 (7)	05 (10)	41 (41)	18 (36)	52 (52)	27 (54)
मुझे नवीन शिक्षण तकनीकों को सीखने और अपनाने का अवसर मिलता है।	01 (01)	00 (00)	06 (06)	06 (12)	14 (14)	12 24)	54 (54)	15 (30)	26 (26)	17 (34)
मैं शिक्षण में डिजिटल उपकरणों और संसाधनों का उपयोग करना आवश्यक समझता/समझती हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	24 (24)	15 (30)	76 (76)	35 (70)
मैं नियमित रूप से अपनी शिक्षण पद्धतियों में सुधार के लिए नवाचारों को शामिल करता/करती हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	20 (20)	05 (10)	40 (40)	22 (44)	40 (40)	23 (46)

टिप्पणी. 1 = पूरी तरह असहमत, 2 = असहमत, 3 = न तो सहमत, न ही असहमत, 4 = सहमत, 5 = पूरी तरह सहमत।
न्यादर्श = 150।

तालिका 2, शिक्षकों की नवाचारों को अपनाने की जागरूकता और तत्परता का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह तालिका शिक्षकों के नए तरीकों, आधुनिक उपकरणों के उपयोग, और उनकी शिक्षण पद्धतियों में बदलाव को शामिल करने की उनकी समग्र खुलेपन को दर्शाती है, जिससे सीखने और सीखाने के परिवेश में सुधार हो सके।

तालिका में सबसे पहले शिक्षा में नई तकनीकों और नवाचारों के प्रति जागरूकता पर ध्यान दिया गया है। केवल एक छोटा प्रतिशत महिला (4 प्रतिशत) और पुरुष (4 प्रतिशत) शिक्षक इस बात से असहमत थे कि वे नियमित रूप से नई शैक्षणिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। हालांकि, शिक्षकों का एक बड़ा हिस्सा इन नवाचारों से अवगत था, जिसमें 50 प्रतिशत पुरुष शिक्षक और 54 प्रतिशत महिला शिक्षक पूरी तरह से सहमत थे। इसका मतलब है कि जहां कुछ शिक्षक कम जुड़े हुए हैं, वहीं अधिकांश शिक्षक शिक्षा में तकनीकी उन्नति के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

तालिका में दूसरा बिंदु शिक्षकों की नए तरीकों को अपनाने की तत्परता को दर्शाता है। दिलचस्प बात यह है कि कोई भी शिक्षक पूरी तरह से नए तरीकों को अपनाने के विरोध में नहीं था, लेकिन सहमति की डिग्री अलग–अलग थी। उदाहरण के लिए, 7 प्रतिशत महिला शिक्षक और 10 प्रतिशत पुरुष शिक्षक आंशिक रूप से सहमत थे, जबकि एक बड़ी संख्या 52 प्रतिशत महिला और 54 प्रतिशत पुरुष शिक्षक पूरी तरह से नए तरीकों को अपनाने के लिए तैयार थे। इसका मतलब है कि अधिकांश शिक्षक बदलाव के लिए तैयार हैं और अपने कक्षाओं में नए तरीकों को एकीकृत करने के लिए उत्सुक हैं, जिससे उनकी शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार हो सके।

तालिका यह भी बताती है कि शिक्षकों को नई शैक्षणिक तकनीकों को सीखने और लागू करने के कितने अवसर मिलते हैं। केवल 1 प्रतिशत महिला शिक्षक नई तकनीकों को सीखने और उन्हें लागू करने के अवसरों के अभाव से असहमत थीं, जबकि 54 प्रतिशत महिला सहमत और 34 प्रतिशत पुरुष शिक्षक इस बात से पूरी तरह सहमत थे कि उन्हें नई तकनीकों को सीखने और लागू करने का अवसर मिलता है। यह दर्शाता है कि अधिकांश शिक्षकों को आधुनिक उपकरणों के साथ जुड़ने का अवसर मिलता है, हालांकि कुछ शिक्षकों के लिए पर्याप्त पहुँच या प्रशिक्षण की कमी अभी भी बनी हुई है।

डिजिटल उपकरणों और संसाधनों का उपयोग शिक्षण में एक और महत्वपूर्ण पहलू है जिसे तालिका में शामिल किया गया है। शिक्षकों की एक बड़ी संख्या 76 प्रतिशत महिला और 70 प्रतिशत पुरुष पूरी तरह से सहमत थे कि आधुनिक शिक्षा में डिजिटल उपकरणों और संसाधनों का उपयोग आवश्यक है। इस बिंदु पर कोई भी शिक्षक असहमत नहीं था, जिससे यह पता चलता है कि प्रौद्योगिकी के एकीकरण को आज के शैक्षिक परिदृश्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस बिंदु पर उच्च स्तर की सहमति से पता चलता है कि शिक्षकों के बीच यह समझ बढ़ रही है कि डिजिटल उपकरण शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

अंत में, तालिका से यह भी पता चलता है कि कई शिक्षक नियमित रूप से अपने शिक्षण तरीकों में सुधार लाने के लिए नवाचारों को शामिल करते हैं। लगभग 40 प्रतिशत महिला और 46 प्रतिशत पुरुष शिक्षक सहमत थे कि वे अपने शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए लगातार नए तरीकों को अपनाते हैं। यह दर्शाता है कि कई शिक्षक अपनी शिक्षण रणनीतियों को विकसित करने और सुधार करने के प्रयासों में सक्रिय हैं, जिसका अंततः छात्रों के सीखने के अनुभव पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्षतः, तालिका शिक्षकों के नए तकनीकों और शिक्षण विधियों को अपनाने के प्रति उनके दृष्टिकोण का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। जहां नवाचारों को अपनाने के लिए शिक्षकों के बीच एक सामान्य खुलापन और तत्परता है, वहीं आकडें कुछ मामलों में पहुँच और जागरूकता में असमानताओं को भी उजागर करता है। हालांकि, समग्र प्रवृत्ति शिक्षण में नवाचारों और डिजिटल उपकरणों के एकीकरण की ओर सकारात्मक बदलाव की ओर संकेत करती है, जिससे सीखने के अनुभव को बेहतर बनाया जा सके।

तालिका 3

शिक्षक नवीन तकनीकों और तरीकों को किस सीमा तक अपने शिक्षण में शामिल कर रहे के प्रति दी गई प्रतिक्रियाएँ

प्रश्न	पूरी तरह असहमत		असहमत		न तो सहमत, न ही असहमत		सहमत		पूरी तरह सहमत	
	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)
मैं अपनी कक्षाओं में नियमित रूप से डिजिटल टूल्स (जैसे प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड) का उपयोग करता/करती हूँ।	00 (00)	00 (00)	19 (19)	08 (16)	18 (18)	16 (32)	37 (37)	20 (40)	26 (26)	06 (12)
मैं विद्यार्थियों के बीच समूह आधारित शिक्षण और संवादात्मक पद्धतियों को प्रोत्साहित करता/करती हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	38 (38)	15 (30)	62 (62)	35 (70)
मैं अपने पाठ्यक्रम में ऑनलाइन संसाधनों और ई–लर्निंग प्लेटफार्मों का समावेश करता/करती हूँ।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	35 (35)	11 (22)	65 (65)	39 (78)
शिक्षण में नवीन तकनीकों के उपयोग से विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया बेहतर होती है।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	15 (15)	05 (10)	85 (85)	45 (90)
नवीन शिक्षण पद्धतियों को अपनाने से मेरी कक्षा की सहभागिता बढ़ती है।	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	33 (33)	17 (34)	77 (77)	33 (66)

टिप्पणी. 1 = पूरी तरह असहमत, 2 = असहमत, 3 = न तो सहमत, न ही असहमत, 4 = सहमत, 5 = पूरी तरह सहमत। न्यादर्श = 150।

तालिका 3, यह दर्शाती है कि किस हद तक शिक्षक अपने कक्षाओं में नई तकनीकों और नवाचारयुक्त शिक्षण विधियों को शामिल कर रहे हैं। प्रदत्त यह बतलाते है कि शिक्षक किस प्रकार से डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं, सामूहिक शिक्षण को प्रोत्साहित कर रहे हैं, और इन नवाचारों को छात्र सीखने और कक्षा की भागीदारी में सुधार के रूप में देख रहे हैं।

सबसे पहले, तालिका में डिजिटल उपकरणों जैसे प्रोजेक्टर और स्मार्ट बोर्ड के उपयोग पर प्रकाश डाला गया है। एक महत्वपूर्ण प्रतिशत महिला शिक्षकों (63 प्रतिशत) और पुरुष शिक्षकों (52 प्रतिशत) ने नियमित रूप से इन डिजिटल उपकरणों का उपयोग कम प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं, जबकि कुछ शिक्षकों (18 प्रतिशत महिला और 32 प्रतिशत पुरुष) न तो सहमत, न ही असहमत व्यक्त की। हालांकि, एक समूह शिक्षकों का (पुरुष शिक्षक 16 प्रतिशत एवं महिला शिक्षक 19 प्रतिशत) असहमत था, जिससे पता चलता है कि कुछ स्थानों पर इन उपकरणों के उपयोग के प्रति प्रतिरोध या संसाधनों की कमी हो सकती है। यह डेटा बताता है कि कई शिक्षक डिजिटल उपकरणों को अपनाने की दिशा में सक्रिय हैं, लेकिन सभी कक्षाओं में इनका उपयोग सार्वभौमिक नहीं है, जिससे संसाधन उपलब्धता या प्रशिक्षण की कमी की ओर इशारा किया जा सकता है।

दूसरे, तालिका में यह दिखाया गया है कि शिक्षक किस प्रकार से छात्रों के बीच सामूहिक और चर्चा आधारित शिक्षण को बढ़ावा दे रहे हैं। अधिकांश महिला शिक्षक (62 प्रतिशत) और पुरुष शिक्षक (70 प्रतिशत)

पूरी तरह से सहमत थे कि वे छात्रों के बीच सामूहिक शिक्षण और चर्चाओं को प्रोत्साहित करते हैं। इसके अलावा, 38 प्रतिशत महिला और 30 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने आंशिक सहमति व्यक्त की, जिससे यह पता चलता है कि शिक्षक समूह आधारित शिक्षण विधियों का उपयोग करने की ओर बढ़ रहे हैं। यह शिक्षकों के बीच इस मान्यता को दर्शाता है कि समूह की बातचीत और चर्चाएं छात्रों की समझ और जुड़ाव को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

ऑनलाइन संसाधनों और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म्स का पाठ्यक्रम में समावेश भी तालिका में एक प्रमुख पहलू है। अधिकांश महिला (65 प्रतिशत) और पुरुष (78 प्रतिशत :) शिक्षकों ने पूरी तरह सहमति व्यक्त की कि वे नियमित रूप से अपने शिक्षण में ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करते हैं, जबकि 35 प्रतिशत महिला और 22 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने आंशिक रूप से सहमति व्यक्त की। यह डेटा आधुनिक शिक्षण प्रथाओं में डिजिटल सामग्री और प्लेटफॉर्म्स के व्यापक एकीकरण की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है।

इसके अलावा, तालिका यह स्पष्ट करती है कि नई तकनीकों का छात्रों की सीखने की प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। एक बड़ा बहुमत महिला शिक्षकों (85 प्रतिशत) और पुरुष शिक्षकों (90 प्रतिशत) ने पूरी तरह से सहमति व्यक्त की कि तकनीकों का उपयोग छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाता है। इस कथन से कोई भी शिक्षक असहमत नहीं था, जो यह दर्शाता है कि शिक्षक तकनीक के लाभों को अच्छी तरह से समझते हैं और मानते हैं कि इससे छात्रों की अवधारणाओं को समझने की क्षमता में सुधार हो रहा है। यह दर्शाता है कि शिक्षा में डिजिटल उपकरणों के निरंतर निवेश की आवश्यकता है ताकि छात्रों की सीखने की क्षमता को और भी बेहतर किया जा सके।

अंत में, तालिका यह बताती है कि नए शिक्षण तरीकों के अपनाने से कक्षा में छात्रों की भागीदारी पर क्या प्रभाव पड़ा है। लगभग 77 प्रतिशत महिला शिक्षक और 66 प्रतिशत पुरुष शिक्षक पूरी तरह से सहमत थे कि नए शिक्षण तरीकों के अपनाने से कक्षा में छात्रों की भागीदारी बढ़ी है। इसके अलावा, 33 प्रतिशत महिला और 34 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने आंशिक रूप से सहमति व्यक्त की, जिससे यह पता चलता है कि अधिकांश शिक्षक मानते हैं कि नए तरीकों का उपयोग छात्रों को अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित कर रहा है। यह दर्शाता है कि नवाचारयुक्त शिक्षण विधियों को अपनाने से न केवल सीखने के परिणाम बेहतर होते हैं, बल्कि यह छात्रों को अधिक सक्रिय रूप से शिक्षा में शामिल करने में भी सहायक है।

निष्कर्षतः, तालिका शिक्षकों के दृष्टिकोण और शिक्षण में नई तकनीकों और विधियों के समावेश का एक विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह दिखाता है कि अधिकांश शिक्षक इन नवाचारों को अपना रहे हैं और यह मानते हैं कि यह छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और कक्षा की भागीदारी को बढ़ावा देने में सहायक है। हालांकि, आकडें कुछ मामलों में अपनाने के स्तर में भिन्नता को भी दर्शाता है, जो यह इंगित करता है कि सभी शिक्षकों को पूरी तरह से इन उपकरणों का उपयोग करने में सक्षम बनाने के लिए अतिरिक्त समर्थन, संसाधनों, या प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है। समग्र प्रवृत्ति एक सकारात्मक दिशा की ओर इशारा करती है, जिसमें शिक्षण में नवाचार और प्रौद्योगिकी का समावेश शिक्षा अनुभवों को बेहतर बनाने की दिशा में बढ़ रहा है।

तालिका 4

शिक्षकों को नवाचार अपनाने और दायित्वों का पालन करने से रोकने वाले कारकों के प्रति दी गई प्रतिक्रियाएँ

प्रश्न	पूरी तरह असहमत		असहमत		न तो सहमत, न ही असहमत		सहमत		पूरी तरह सहमत	
	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)	महिला *आवृत्ति* (प्रतिशत)	पुरुष *आवृत्ति* (प्रतिशत)
मुझे शिक्षण में नवाचारों को लागू करने में समय की कमी महसूस होती है।	44 (44)	25 (50)	48 (48)	20 (40)	08 (8)	05 (10)	00 (00)	00 (00)	00 (00)	00 (00)
मेरी शिक्षण संस्थान में नवाचारों को अपनाने के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी है।	00 (00)	00 (00)	18 (18)	11 (22)	15 (15)	12 (24)	33 (33)	15 (30)	44 (44)	12 (24)
शिक्षण में नवीन तकनीकों का उपयोग करने के लिए मुझे पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है।	54 (54)	31 (62)	25 (25)	15 (30)	09 (9)	00 (00)	10 (10)	03 (6)	02 (02)	01 (2)
नवाचारों को अपनाने में सबसे बड़ी चुनौती संसाधनों की अनुपलब्धता है।	23 (23)	08 (16)	20 (20)	11 (22)	18 18)	13 (26)	24 (24)	07 (14)	15 (15)	11 (22)
शिक्षण में नवीन तरीकों को लागू करने के लिए मुझे प्रबंधन का समर्थन नहीं मिलता	52 (52)	30 (60)	22 (22)	08 (16)	16 (16)	05 (10)	10 (10)	07 (14)	00 (00)	00 (00)

टिप्पणी. 1 = पूरी तरह असहमत, 2 = असहमत, 3 = न तो सहमत, न ही असहमत, 4 = सहमत, 5 = पूरी तरह सहमत।
न्यादर्श = 150।

तालिका 4 में प्रस्तुत परिणाम शिक्षक जागरूकता और नवाचारों को अपनाने और उनकी जिम्मेदारियों को पूरा करने के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन दर्शाते हैं, जिसमें प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण लिंग के आधार पर किया गया है। डेटा इस बात को उजागर करता है कि शिक्षकों को नई शिक्षण पद्धतियों को लागू करने में कई प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि समय की कमी, संसाधनों की कमी, अपर्याप्त प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन, जिसमें पुरुष और महिला शिक्षकों की धारणाओं में महत्वपूर्ण अंतर देखा गया है।

एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि पुरुष और महिला दोनों शिक्षक इस बात से असहमत हैं कि समय की कमी उनके शिक्षण में नवाचारों को लागू करने में एक बड़ी बाधा है। विशेष रूप से, 44 प्रतिशत महिला शिक्षक और 50 प्रतिशत पुरुष शिक्षक पूरी तरह असहमत हैं कि समय की बाधाएं उनके लिए नए तरीकों को शैक्षिक दिनचर्या में शामिल करने में कठिनाई उत्पन्न करती हैं। इससे पता चलता है कि दोनों लिंग समय प्रबंधन को नवाचार अपनाने में एक प्रमुख चुनौती नही मानते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों में आवश्यक संसाधनों की कमी कम प्रति न्यादर्श द्वारा चयनित प्रतिउत्तर स्पष्ट करते है कि, कुल 77 प्रतिशत महिला शिक्षक और 54 प्रतिशत पुरुष शिक्षक सहमत या पूरी तरह सहमत हैं कि आवश्यक सामग्री या बुनियादी ढांचे की अनुपलब्धता उन्हें नई शिक्षण तकनीकों को अपनाने से रोकती है। इससे संकेत मिलता है कि पुरुष शिक्षक की तुलना में महिला शिक्षकों को संसाधनों की कमी अधिक महसूस होती है, जो संस्थागत समर्थन की पहुंच या अपेक्षाओं में असमानताओं को दर्शाती है।

व्यावसायिक विकास के संदर्भ में, महिला शिक्षकों का बड़ा प्रतिशत (54 प्रतिशत) तथा 62 प्रतिशत पुरुष शिक्षक यह महसूस करते हैं कि उन्हें कक्षाओं में आधुनिक तकनीकों और नवाचारी तरीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। जबकि 12 प्रतिशत महिला शिक्षिकाएँ एवं 8 प्रतिशत पुरुष शिक्षक प्रशिक्षण की कमी को व्यक्त करते हैं। यह असमानता बताती है कि जबकि दोनों समूह प्रशिक्षण में अंतर को स्वीकार करते हैं, यह अंतर महिला शिक्षकों के लिए अधिक स्पष्ट है, जो प्रौद्योगिकी उपयोग और नवाचार के लिए कौशल निर्माण के मामले में अधिक असमर्थित महसूस करती हैं।

तालिका यह भी दर्शाती है कि दोनों लिंग यह अस्वीकार करते हैं कि सीमित संसाधनों के कारण नवाचारों को लागू करना एक बड़ी चुनौती है, जिसमें 23 प्रतिशत महिला और 16 प्रतिशत पुरुष शिक्षक पूरी तरह असहमत हैं कि यह एक महत्वपूर्ण कठिनाई है। इससे यह विचार ओर प्रबल होता है कि संस्था में संसाधनों की उपलब्धता, चाहे हो या कमी हो, शिक्षकों द्वारा स्वयं के स्तर पर नवाचार अपनाने की इच्छा उन्हे कुछ नवीन करने के लिए प्रेरित करती है।

अंत में, जब प्रबंधन के समर्थन की बात आती है, तो 52 प्रतिशत महिला शिक्षक और 60 प्रतिशत पुरुष शिक्षक संकेत देते हैं कि उन्हें नए शिक्षण तरीकों को लागू करने में प्रबंधन से पर्याप्त समर्थन मिलता है। यह प्रशासनिक समर्थन, संसाधनों में कमी और प्रशिक्षण साथ मिलकर, शिक्षकों द्वारा नवाचारी दृष्टिकोणों को उनके शिक्षण अभ्यास में शामिल करने की चुनौतियों शिक्षकों के दायित्व को और भी बढ़ा देती है।

सारांश में, आकडों से पता चलता है कि बिना शिक्षक शिक्षा में नवाचारों को अपनाने में महत्वपूर्ण बाधाओं में संसाधनों की कमी प्रमुख हैं। समय की सीमाएं, अपर्याप्त प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन मुख्य बाधाएं नही हैं, जिनमें इन मुद्दों की धारणा में कुछ लिंग–आधारित अंतर हैं। महिला शिक्षक एवं पुरुष शिक्षक समय की कमी और संसाधनों की कमी से अधिक प्रभावित महसूस नही करती हैं। ये अंतर्दृष्टि संसाधनों की कमी को दूर करने और शैक्षिक नवाचार के लिए एक अधिक सहायक वातावरण तैयार करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की आवश्यकता का सुझाव देती हैं।

चर्चा अनुभाग

वर्तमान अध्ययन भोपाल जिले में स्थित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में दायित्व बोध एवं नवाचार के प्रति जागरूकता पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिससे कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ सामने आई हैं। निष्कर्ष रेखांकित करते हैं कि शिक्षकों की भूमिका शैक्षिक नवाचारों को बढ़ावा देने में कितनी महत्वपूर्ण होती है, जबकि वे छात्रों के विकास की जिम्मेदारियों को भी निभाते हैं। शर्मा और गुप्ता (2015) के अध्ययन के समान, यह शोध भी इस धारणा का समर्थन करता है कि शिक्षक की जिम्मेदारी की भावना छात्रों के परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, जिसमें शैक्षणिक और नैतिक विकास दोनों का महत्व उजागर होता है।

इसके अलावा, यह शोध अध्ययन कुमार और सिंह (2018) के शोध की पुष्टि करता है, जिसमें यह बताया गया है कि छात्रों की संलग्नता और समझ को बढ़ाने के लिए नवीन शिक्षण प्रथाओं को अपनाना कितना आवश्यक हो गया है। दोनों अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों को अपनी शिक्षण प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए नई प्रौद्योगिकीय उपकरणों और विधियों को अपनाना अनिवार्य है। यह वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिसमें कई शिक्षकों ने डिजिटल मीडिया और सक्रिय शिक्षण रणनीतियों जैसी आधुनिक शैक्षिक उपकरणों को अपनाने की इच्छा व्यक्त की।

इसके अतिरिक्त, राणा और मिश्रा (2019) ने नवाचार और शिक्षक की व्यावसायिक जिम्मेदारी के बीच संबंध का विश्लेषण किया, जिसमें यह पाया गया कि जो शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं, वे नए शिक्षण तरीकों को अपनाने की ओर अधिक प्रवृत्त होते हैं। यह वर्तमान अध्ययन में भी परिलक्षित होता है, जहाँ उच्च जिम्मेदारी की भावना वाले शिक्षकों ने अपने कक्षाओं में नवाचार को अपनाने की अधिक प्रवृत्ति दिखाई। ये निष्कर्ष इस बात को सुदृढ़ करते हैं कि जिम्मेदारी और नवाचार प्रभावी शिक्षण के आपस में जुड़े हुए पहलू हैं।

डार्लिंग–हैमंड और उनके सहयोगियों (2017) के एक अध्ययन में यह जोर दिया गया है कि पेशेवर विकास शिक्षकों की क्षमता को नवाचारी प्रथाओं को अपनाने में कैसे सुधार सकता है। उनके शोध से पता चला कि जब शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण और समर्थन प्रदान किया जाता है, तो वे नई प्रौद्योगिकियों और तरीकों को अपने शिक्षण में शामिल करने की अधिक संभावना रखते हैं। यह इस अध्ययन के निष्कर्षों से मेल खाता है। भोपाल में, कई शिक्षकों ने अधिक संरचित पेशेवर विकास के अवसरों की इच्छा व्यक्त की ताकि वे नवाचारों को प्रभावी ढंग से शामिल कर सकें।

इसके अतिरिक्त, फुलन (2019) ने नेतृत्व और संस्थागत संस्कृति का नवाचार अपनाने पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन किया। उनके काम ने यह दिखाया कि वे शैक्षिक संस्थाएँ जो सहयोगात्मक और खुला वातावरण बनाते हैं, वे शिक्षकों को नई शैक्षिक तकनीकों को बिना असफलता के भय के नवीन तकनीक को अपनाने में सक्षम बनाते हैं। यह वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के साथ मेल खाता है, जिसमें पाया गया कि भोपाल में जिन शिक्षकों को उनके संस्थानों का समर्थन महसूस हुआ, वे डिजिटल उपकरणों और सहयोगात्मक शिक्षण विधियों जैसे नवाचारों को लागू करने की अधिक संभावना रखते थे।

इसके अतिरिक्त, झाओ और फ्रैंक (2018) के एक तुलनात्मक अध्ययन ने यह जांचा कि बाहरी दबाव, जैसे कि मानकीकृत परीक्षण, शिक्षकों की नवाचार करने की क्षमता को कैसे बाधित कर सकते हैं। यह वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के प्रतिरूप है, जिसमें पाया गया कि शिक्षक अक्सर समय की कमी और पाठ्यक्रम की मांगों का सामना करते हैं, जो उन्हें नई शिक्षण विधियों को अपनाने की क्षमता को सीमित करता है। झाओ और फ्रैंक का तर्क है कि नवाचार को पनपने के लिए, शैक्षिक प्रणालियों को शिक्षकों के लिए जवाबदेही उपायों और रचनात्मक स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है, जो इस अध्ययन के कई प्रतिभागियों द्वारा भी व्यक्त किया गया।

अंत में, मिश्रा और कोहलर (2006) का टेक्नोलॉजिकल पेडागॉजिकल कंटेंट नॉलेज ढांचे पर आधारित कार्य एक उपयोगी तुलना प्रदान करता है। उनके अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया है कि शिक्षकों को नवाचारों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सामग्री ज्ञान, शिक्षण विधियों और प्रौद्योगिकीय विशेषज्ञता का समायोजन करने की आवश्यकता है। वर्तमान अध्ययन ने भी इसी प्रकार पाया कि जो शिक्षक कक्षा में प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग कर रहे थे, उनके छात्रों की सहभागिता का स्तर अधिक था, जो ज्च्ब्ज्ञ मॉडल के सिद्धांतों के अनुरूप है। हालांकि, वर्तमान अध्ययन कुछ बाधाओं को भी उजागर करता है, जैसे सीमित संसाधन जो नवाचारात्मक प्रथाओं के पूर्ण

क्रियान्वयन में बाधा डालते हैं, जो अन्य शोधकर्ताओं द्वारा उल्लेखित चुनौतियों के समान हैं। यह नए शैक्षिक प्रथाओं को अपनाने में संस्थागत समर्थन की आवश्यकता को इंगित करता है।

उपसंहार

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि भोपाल जिले के शिक्षकों में दायित्व बोध की भावना और नवाचार के प्रति जागरूकता एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिन शिक्षकों ने अपनी जिम्मेदारियों के प्रति अधिक जागरूकता दिखाई, वे अपने शिक्षण में नवाचार को अपनाने में अधिक सक्रिय रहे। इस शोध से यह भी पता चलता है कि शिक्षकों की नवाचार क्षमता केवल उनके व्यक्तिगत प्रयासों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संसाधनों और संस्थागत समर्थन की भी आवश्यकता होती है।

शिक्षक जो नए शिक्षण उपकरणों और तकनीकों को अपनाने के इच्छुक थे, उनके पास संस्थागत समर्थन की कमी और संसाधनों की अनुपलब्धता जैसी बाधाएं सामने आईं। इसके बावजूद, शिक्षकों ने डिजिटल तकनीक और सहयोगात्मक शिक्षण विधियों जैसी आधुनिक नवाचारी प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता को पहचाना और इसे अपने शिक्षण में लागू करने की इच्छा प्रकट की।

इस अध्ययन ने यह भी दिखाया कि नवाचार और जिम्मेदारी के बीच गहरा संबंध है। जो शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों को लेकर अधिक सजग थे, वे शैक्षिक नवाचारों को अपनाने में भी आगे रहे। इन निष्कर्षों से यह सिद्ध होता है कि शिक्षक समुदाय में नवाचार और जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करने के लिए न केवल प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है, बल्कि उन्हें उपयुक्त संसाधन और समर्थन भी प्रदान किए जाने चाहिए।

कुल मिलाकर, इस अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि नवाचारी शैक्षणिक प्रथाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए एक मजबूत संस्थागत ढांचा, संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षकों की जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता अनिवार्य है।

संदर्भग्रंथ सूंची

कुमार, ए., और सिंह, वी. (2018). शिक्षा में नवीन शिक्षण प्रथाएँ: भोपाल जिले का एक अध्ययन. *शैक्षिक नवाचार पत्रिका, 9*(2), 150–165.

झाओ, वाई., और फ्रैंक, के.ए. (2018). स्कूलों में प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक: एक पारिस्थितिक दृष्टिकोण. *अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 40*(4), 807–840. https://doi-org/10-3102/00028312040004807

डार्लिंग–हैमंड, एल., हाइलर, एम. ई., और गार्डनर, एम. (2017). *प्रभावी शिक्षक व्यावसायिक विकास.* लर्निंग पॉलिसी इंस्टीट्यूट. पुनःप्राप्त अगस्त 31, 2024, से https://learningpolicyinstitute.org/sites/default/files/product-files/Effective_Teacher_Professional_Development_REPORT.pdf

फुलन, एम. (2019). *परिवर्तन की संस्कृति में नेतृत्व करना* (दूसरा संस्करण). जोसी–बास.

मिश्रा, पी., और कोहलर, एम.जे. (2006). प्रौद्योगिकीय, शिक्षण और सामग्री ज्ञानरू शिक्षक ज्ञान के लिए एक रूपरेखा. *टीचर्स कॉलेज रिकॉर्ड, 108*(6), 1017–1054. https://doi-org/10-1111/j-1467&9620-2006-00684.x

राणा, एस., और मिश्रा, के. (2019). उच्च शिक्षा में शिक्षण विधियों में नवीनता और शिक्षक की जिम्मेदारी के बीच संबंधरू भोपाल में एक अध्ययन. भारतीय शिक्षा पत्रिका, 14(4), 301–320.

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद. (एन ए). *डब्ल्यूआरसी मान्यता प्राप्त संस्थान* (मध्य प्रदेश). पुनःप्राप्त अप्रैल 30, 2024, से https://ncte.gov.in/Website/RecognizedInstitutionLists.aspx?cid=&stateid=F1PdRNitHmWdvYoGExa3GA%3d%3d&state=MADHYA_PRADESH&regionid=2

शर्मा, आर ए. (2006). *शिक्षा अनुसंधान.* आर लाल बुक डिपो.

शर्मा, आर., और गुप्ता, पी. (2015). शिक्षक की जिम्मेदारी की भावना और इसका छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव. *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अध्ययन पत्रिका, 12*(3), 245–260.

References

Darling-Hammond, L., Hyler, M. E., & Gardner, M. (2017). *Effective teacher professional development*. Learning Policy Institute. Retrieved August 31, 2024, from https://learningpolicyinstitute.org/sites/default/files/product-files/Effective_Teacher_Professional_Development_REPORT.pdf

Fullan, M. (2019). *Leading in a culture of change* (2nd ed.). Jossey-Bass.

Kumar, A., & Singh, V. (2018). Innovative teaching practices in education: A case study of Bhopal district. *Journal of Educational Innovation*, *9*(2), 150-165.

Mishra, P., & Koehler, M. J. (2006). Technological pedagogical content knowledge: A framework for teacher knowledge. *Teachers College Record*, 108(6), 1017–1054. https://doi.org/10.1111/j.1467-9620.2006.00684

National Council for Teacher Education. (ND). *WRC Recognized Institutions* (MADHYA PRADESH). Retrieved April 30, 2024, from https://ncte.gov.in/Website/RecognizedInstitutionLists.aspx?cid=&stateid=F1PdRNitHmWdvYoGExa3GA%3d%3d&state=MADHYA_PRADESH&regionid=2

Rana, S., & Mishra, K. (2019). The correlation between teacher's sense of duty and innovation in teaching methods: A study of higher education in Bhopal. *Indian Journal of Education*, *14*(4), 301-320.

Sharma, R. A. (2006). *Educational research*. R L Book Depo.

Sharma, R., & Gupta, P. (2015). Teacher's sense of duty and its effect on student achievement. *International Journal of Educational Studies*, *12*(3), 245-260.

Zhao, Y., & Frank, K. A. (2018). Factors affecting technology uses in schools: An ecological perspective. *American Educational Research Journal*, *40*(4), 807–840. https://doi.org/10.3102/00028312040004807

प्राप्तिः 07 जुलाई 2024
संशोधनः 29 सितम्बर 2024
स्वीकृतिः 08 अक्टूबर